स्वच्छता का कारण गंगा

अंकु श्री

कल-कल छल-छल सुन सारा दुख हट जाता है
पांच डुबकी से मन का कष्ट कट जाता है।

गोमुख से निकल गंगोत्री होती आती हो
हरिद्वार में तुम सप्तधार में बंट जाती हो।

हर की पौड़ी में बहुत भीड़ लग जाती है
गंगा-आरती देख भीड़ अधीर हो जाती है।

बिहार-झारखण्ड से बांग्ला देश जाती हो
बंगाल में पहुंच सागर में मिल जाती हो।

जहां-जहां से गुजरी गंगा, बसे कई नगर
नदी-बीच और ऊपर बन गये कई डगर।

संस्कृति निर्मात्रि तुम हो, सभ्यता के हो वाहक
असभ्य लोगों से गंदी हो गयी हो नाहक।

स्नेहिल प्यार तेरा सभी पर बना हुआ है
कुछ ने किया अस्वच्छ जो शोर मचा हुआ है।

जो खुद पोषक है, पोषण उसका होने दें
बहुत रो चुकी गंगा, इसे और न रोने दें।

बहती नदी नहीं रुकती, इसको बहने दें
जैसी प्रकृति है, इसे उसमें रहने दें।

प्यारा जल, न्यारा जल, है काम का गंगाजल
कई जगह तेरा माता, हो गया रंगा जल।

कम करें बात और अधिक करें सफाई
गंगा माता से अब नहीं करें बेवफाई।

हर गंगे, मां गंगे, कितना प्यारा नारा है
सभ्यता गढ़ने हेतु सभी घाट हमारा है।

तेरे जल में तरह-तरह के जीव रहते हैं
जल ऊपर कई तरह के वाहन बहते हैं।

रोग निवारक तुम हो, सबको करती हो चंगा
गंदगी तुम पचाती, स्वच्छता का कारण गंगा।

जय गंगे, जय गंगे

कल-कल कर-कर के छल-छल बहती है गंगा
आगे बढ़ना ही जीवन है कहती है गंगा।

चली है कहां से, कहां तुझे जाना है
इठलाती, इतराती व शांत बह जाना है।

गंगोत्री से चलती, जाती गंगा सागर
बूँद-बूँद से जैसे भर जाता है गागर।

गंदगी चौतरफा तू बहुत पचाती है
फिर भी गंदगी से तू नहीं बच पाती है।

सीमा लांघें नहीं, समय है चेतने का
पाप नहीं लें हम, पीढ़ी का गला रेतने का।

छेड़-छाड़ करने पर बाढ़ तू लाती है
हाहाकार मचता है, कहर बरपाती है।

नहाने से तुझमें भागता सब रोग है
तेरी पूजा इसलिये करते सब लोग हैं।

गूंजे सब ओर हर-हर गंगे, मां तू गंगे,
हर डुबकी संग बोले, जय गंगे, जय गंगे।

संपर्क करें:
अंकुश्री
प्रेस कॉलोनी, सिदरौल, पोस्ट बॉक्स 28, नामकुम,
रांची-834 010
मो.नं. 08809972549
ईमेलः ankushreehindiwriter@gmail.com